International Journal of Humanities and Social Science Invention (IJHSSI)
ISSN (Online): 2319 – 7722, ISSN (Print): 2319 – 7714
www.ijhssi.org ||Volume 7 Issue 12 Ver. I || December 2018 || PP 83-87

भारतीय धार्मिक पुस्तकों में शूद्रों की स्थिति का वर्णन।

डा बीरेन्द्र प्रताप सिंह
अम्बिका राम देवी डिग्री कॉलेज रमना तौफीर, तहसील हरैया, जनपद बस्ती

सार

पूसन शब्द वैदिक युग के उपनिषद में आता है, जिसका अर्थ है "पोषक" और इसे पृथ्वी के निर्माण और उत्पादन गतिविधियों से जोड़ता है जो पूरी दुनिया का पोषण करती है, और पाठ इस पूसन को शूद्र कहता है। हिंदू पौराणिक कथाओं में पूसन शब्द का अर्थ सूर्य का सारथी है जो उन रास्तों को जानता है जो सभी के लिए प्रकाश, ज्ञान और जीवन लाते हैं। हालाँकि, यही पूसन शब्द ब्राह्मण ग्रंथ में वैश्य से जुड़ा है। 1500 ईसा पूर्व और 1200 ईसा पूर्व,1868 में जॉन मुइर ने सुझाव दिया कि जिस कविता में चार वर्णों का उल्लेख है, उसमें "अपनी शब्दावली और विचारों दोनों में आधुनिकता का हर चरित्र है"। पुरुष सूक्त पद्य को अब आम तौर पर वैदिक पाठ में बाद की तारीख में शामिल किया गया माना जाता है।

कीवर्ड *पौराणिक कथाएं, सूक्ति, औद्योगिक समाज, राष्ट्रीय भावना, धार्मिक ग्रंथ।*

प्रस्तावना

शूद्र शब्द ऋग्वेद में केवल एक बार आया है ।("मनुष्य का भजन") में सन्निहित सृष्टि की पौराणिक कहानी में पाया जाता है। इसमें आदिम मनुष्य के शरीर से चार वर्णों के निर्माण का वर्णन है । इसमें कहा गया है कि ब्राह्मण उसके मुख से, क्षत्रिय उसकी भुजाओं से, वैश्य उसकी जाँघों से और शूद्र उसके पैरों से उत्पन्न हुआ । मनुस्मृति मुख्य रूप से ब्राह्मणों (पुरोहित वर्ग) और क्षत्रियों (राजा, प्रशासन और योद्धा वर्ग) के लिए आचार संहिता (धर्म नियमों) की चर्चा करती है । पाठ में शूद्रों के साथ-साथ वैश्यों का भी उल्लेख है, लेकिन यह भाग इसका सबसे छोटा खंड है। मनुस्मृति के अनुभागों में वैश्यों के लिए आठ नियम और शूद्रों के लिए दो नियम बताए गए हैं। खंड 10.43-10.44 में मनु उन क्षत्रिय जनजातियों की सूची देते हैं,जो पुजारियों और उनके संस्कारों की उपेक्षा के कारण शूद्रों की स्थिति में आ गए थे। ये हैं: पुंड्रक , कोड, द्रविड़, कम्बोज , यवन , शक , पारद , पहलव , किरात , दराद और खास ।

शूद्रों का प्राचीन इतिहास

इंग्लैंड के विकासोन्मुख औद्योगिक समाज और भारत के पुराने तथा पतनोन्मुख समाज के बीच की गहरी विषमता ने राष्ट्रीय भावना से प्रेरित भारत के शिक्षित और बुद्धिजीवी वर्ग का ध्यान आकर्षित किया । उन्होंने महसूस किया कि सती प्रथा , आजीवन वैधव्य , बाल विवाह और सजातीय विवाह की प्रथा राष्ट्र की प्रगति में बाधक हैं । चूंकि ये प्रथाएं धर्मशास्त्रों के बल पर चल रही थीं , इसलिए यह अनुभव किया गया कि उनमें आवश्यक सुधार आसानी से लाए जा सकते हैं , यदि यह सिद्ध किया जा सके कि वे सुधार धार्मिक ग्रंथों के अनुरूप हैं । इस प्रकार सन 1818 ई ० में राममोहन राय ने सती प्रथा के विरोध में प्रकाशित अपनी प्रथम पुस्तिका के द्वारा यह सिद्ध करने का प्रयास किया कि शास्त्रों के अनुसार , नारी के मोक्ष का सर्वोत्तम साधन सती प्रथा नहीं है । इसी शताब्दी के पांचवें दशक में स्मृति ग्रंथों के आधार पर ईश्वरचंद्र विद्यासागर ने विधवा विवाह का समर्थन किया । सातवें दशक में आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानंद ने मूल संस्कृत ग्रंथों के

उद्धरणों का संकलन सत्यार्थ प्रकाश के नाम से प्रकाशित किया । उनके जरिए उन्होंने विधवा विवाह का समर्थन किया , जन्म पर आधारित जाति प्रथा के बहिष्कार की घोषणा की , और शूद्रों को भी वेदाध्ययन का अधिकारी माना । हमें मालूम नहीं कि आरंभ में समाज सुधारकों को म्यूर की समकालीन रचनाओं से कहां तक प्रेरणा मिली । उसने यह प्रमाणित करने का प्रयास किया है कि प्राचीन युग में यह विश्वास प्रचलित नहीं था कि चारों वर्गों की उत्पत्ति आदि मानव से हुई है । " हम यह भी नहीं जानते कि वेबर की उन रचनाओं का भी उन पर कोई प्रभाव पड़ा या नहीं जिनमें उसने ब्राह्मणों और सूत्रों के आधार पर वर्ण व्यवस्था का प्रथम महत्वपूर्ण विश्लेषण प्रस्तुत किया है । 1891 ई ० में जब सम्मति आयु विधेयक (एज आफ कंसेंट बिल) प्रस्तुत किया जा रहा था , सर आर ० जी ० भंडारकर ने एक प्रामाणिक पुस्तिका प्रकाशित की जिसमें संस्कृत ग्रंथों का उद्धरण देकर उन्होंने यह सिद्ध करने का प्रयास किया कि वयस्क होने पर ही किसी लड़की का विवाह किया जाना चाहिए । दूसरी ओर बाल गंगाधर तिलक ने , जो विदेशी शासकों के विरुद्ध किसी भी हथियार का प्रयोग करने को तैयार रहते थे , प्राचीन संदर्भग्रंथों से उद्धरण प्रस्तुत करके इस विधेयक का विरोध किया।आधुनिक सुधारों के समर्थन में प्राचीन ग्रंथों का उद्धरण देने की प्रवृत्ति कितनी व्यापक थी इसका कुछ अनुमान आर ० जी ० भंडारकर (1895) के इन शब्दों से किया जा सकता है : ' प्राचीन काल में लड़कियों का विवाह वयस्क होने पर किया जाता था , अब उनका विवाह उसके पूर्व ही हो जाता है ; तब विधवा विवाह का प्रचलन था , अब वह बिल्कुल उठ गया है ।

<u>शूद्रों की उत्पत्ति</u>

1847 ई ० में रोव ने संकेत किया था कि शूद्र आर्यों के समाज से बाहर के रहे होंगे । ' उस समय से सामान्यतया यह विचारधारा चली आ रही है कि ब्राह्मण कालीन समाज का चौथा वर्ण मुख्यतया आर्येतर लोगों का था जिनकी वैसी स्थिति आर्य विजेताओं ने बना रखी थी । यूरोप के गौरांग और एशिया तथा अफ्रीका के गौरांगेतर लोगों के बीच हुए संघर्ष से साम्य के आधार पर इस विचार धारा की पुष्टि की जाती रही है । यदि दास और दस्यु दोनों आर्येतर भाषा बोलने वाले भारत के मूल निवासी हों , तो उपर्युक्त विचारधारा के पक्ष में ऋग्वेद से प्रमाण प्रस्तुत करना संभव है इस ग्रंथ के अनेक सूक्तों में , जिन्हें अथर्ववेद में भी दुहराया गया है , आर्यों के देवता इंद्र को दासों के विजेता के रूप में चित्रित किया गया है । ऐसा प्रतीत होता है कि ये दास मनुष्य ही रहे होंगे । वेदों में कहा गया है कि इंद्र ने अघम दास वर्ण को गुफाओं में रहने को बाध्य कर दिया था । विश्व - नियंता की हैसियत से दासों को पराधीन बनाने का भार उनके ऊपर है , और उनसे यह भी अनुरोध किया जाता है कि वे इन दासों का विनाश करने के लिए तैयार रहें । ऋग्वैदिक स्तुतियों में बार बार इंद्र से अनुरोध किया गया है कि वे दास जनजाति (विश्) का विध्वंस करें । ' इंद्र के बारे में यह भी कहा गया है कि उसने दस्युओं को सभी अच्छे गुणों से वंचित रखा है और दासों को अपने वश में किया है । वेदों में दासों की अपेक्षा दस्युओं के विनाश और उन्हें पराधीन बनाने की चर्चा अधिक है । कहा गया है कि दस्युओं को मारकर इंद्र ने आर्य वर्ण की रक्षा की है । " स्तुतियों में उससे अनुरोध किया गया है कि वह दस्युओं से युद्ध करे ताकि आर्यों की शक्ति बढ़ सके । दस्युओं की हत्या की चर्चा कम से कम बारह जगहों पर हुई है जिनमें से अधिकांश हत्याएं इंद्र के द्वारा ही बताई गई हैं । इसके विपरीत यद्यपि दासों की हत्या के अलग अलग प्रसंग भी आए हैं किंतु ' दासहत्या ' शब्द कहीं नहीं मिलता है । इससे पता चलता है कि दास और दस्यु पर्यायवाची नहीं थे और आर्य दस्युओं का विनाश निर्ममतापूर्वक करते थे , पर दासों के प्रति उनकी नीति नरम थी ।

भारतीय धार्मिक पुस्तकों में शूद्रों की स्थिति

इतिहासकार आरएस शर्मा के अनुसार , इस श्लोक का उद्देश्य यह दर्शाना रहा होगा कि शूद्रों की वंशावली अन्य वर्णों के समान थी और इसलिए वे वर्णों का एक वर्ग थे।वैदिक समाज दूसरी ओर, यह विषम ब्राह्मणवादी समाज के लिए एक सामान्य पौराणिक उत्पत्ति प्रदान करने के प्रयास का भी प्रतिनिधित्व कर सकता है। जबकि *ऋग्वेद को* सबसे अधिक संभावना सी के बीच संकलित किया गया था।

इतिहासकार आरएस शर्मा कहते हैं कि "ऋग्वैदिक समाज न तो श्रम के सामाजिक विभाजन के आधार पर संगठित था और न ही धन में अंतर के आधार पर मुख्य रूप से रिश्तेदारों, जनजाति और वंश के आधार पर संगठित था। "

शर्मा के अनुसार, *ऋग्वेद* या *अथर्ववेद* में कहीं भी "दास और आर्यों के बीच, या शूद्र और उच्च वर्णों के बीच भोजन और विवाह के संबंध में प्रतिबंध का कोई सबूत नहीं है"। इसके अलावा, अथर्ववेद के उत्तरार्ध में शर्मा कहते हैं, "शूद्र ध्यान में नहीं आता, शायद इसलिए कि उसका वर्ण उस स्तर पर मौजूद नहीं था"।

समाज सुधारक डॉ. भीम राव अंबेडकर का मानना था कि शुरू में केवल तीन वर्ण थे: ब्राह्मण , क्षत्रिय और वैश्य , और शूद्र क्षत्रिय थे जिन्हें ब्राह्मणों द्वारा उपनयन , एक दीक्षा संस्कार से वंचित कर दिया गया था। इस दावे का आरएस शर्मा जैसे इतिहासकारों ने खंडन किया है । शर्मा ने अपनी जानकारी के लिए केवल ग्रंथों के अनुवादों पर भरोसा करने के लिए अम्बेडकर की आलोचना की, और कहा कि अम्बेडकर ने शूद्रों को उच्च जाति मूल का साबित करने के एकमात्र उद्देश्य से पुस्तक लिखी, जो उस समय के दौरान निचली जातियों के उच्च शिक्षित हिस्सों के बीच बहुत लोकप्रिय थी।

श्री अरबिंदो कहते हैं कि शूद्र और अन्य वर्ण एक अवधारणा है जो सभी मनुष्यों में अलग-अलग अनुपात में पाई जाती है। उनका कहना है कि इसे एक ऐसी प्रणाली में बाहरी रूप दिया गया और यंत्रीकृत किया गया, जो इसके उद्देश्य से बिल्कुल अलग थी। उत्तर भारत में वैदिक हिंदू धर्म के सिद्धांतों का दक्षिण में कम प्रभाव था, जहां सामाजिक विभाजन केवल ब्राह्मण और शूद्र थे। हालाँकि, कुछ गैर-ब्राह्मणों ने खुद को अन्य गैर-ब्राह्मण समुदायों से अलग करने के प्रयास में *सत शूद्र* (स्वच्छ शूद्र) के वर्गीकरण को अपनाया ।

रोमिला थापर के अनुसार , वैदिक पाठ में शूद्र और अन्य वर्णों के उल्लेख को इसके मूल के रूप में देखा गया है, और "समाज के वर्ण क्रम में, शुद्धता और प्रदूषण की धारणाएं केंद्रीय थीं और इस संदर्भ में गतिविधियों पर काम किया गया था" और यह है "सूत्रबद्ध और व्यवस्थित, समाज को एक पदानुक्रम में व्यवस्थित चार समूहों में विभाजित करना"।

शर्मा के अनुसार, शूद्र वर्ग की उत्पत्ति इंडो-आर्यन और गैर-इंडो-आर्यन से हुई थी, जिन्हें "आंशिक रूप से बाहरी और आंशिक रूप से आंतरिक संघर्षों के कारण" उस स्थिति में धकेल दिया गया था।

गेल्डनर के अनुसार ऋग्वेद मंडल सात का तैतीसवां सूक्त जिसमें इस युद्ध की चर्चा की गई है , प्रारंभिक काल से संबंधित है । दस राजाओं का युद्ध मुख्यतः ऋग्वेदकालीन आर्यों की दो मुख्य शाखाओं ' पूरुओं ' और ' भारतों ' के बीच हुआ था , जिसमें आर्येतर लोग भी सहायक के रूप में सम्मिलित हुए होंगे । ऋग्वेद की सुविख्यात नायक सुदास् भारतों का नेता था और पुरोहित वसिष्ठ उसके सहायक थे । इनके शत्रु थे पांच प्रसिद्ध जनजातियों यथा ' अनु ' , ' दुह्म ' , ' यदु ' , ' तुर्वशस् ' और ' पूरु ' तथा पांच गौण जनजातियों यथा ' अलिन ' , ' पक्थ ' , ' भलानस् ' , ' शिव ' और ' विषाणिन ' के दस राजा विरोधी गुट के सूत्रधार ऋषि

विश्वामित्र थे और उसका नेतृत्व पूरुओं ने किया था । ऐसा प्रतीत होता है कि इस युद्ध में आर्यों की लघुतर जनजातियों ने अपना अलग अस्तित्व बनाए रखने का स्मरणीय प्रयास किया ।

सुरदास के नेतृत्व में भारतों ने पुरुष्णि (रावी) के किनारे उन्हें पूरी तरह हरा दिया । इन पराजित आर्यों के साथ कैसा व्यवहार किया गया , इसका कोई संकेत नहीं मिलता , किंतु अनुमान है कि उनके प्रति भी वैसा ही व्यवहार किया गया होगा जैसा आर्येतर लोगों के साथ किया गया था । यह असंभव नहीं कि इस तरह के और भी कई अंतर्जातीय संघर्ष हुए हों जिनका कोई वृत्तांत हमें उपलब्ध नहीं । ऐसे संघर्षों के सकेत उन प्रसंगों में मिलते हैं जिनमें आर्यों को देवताओं द्वारा प्रतिष्ठित व्रतों का भंजक माना गया है । काणे ने ऋग्वेद से पांच अंश उद्धृत किए हैं जिनका ऐसा अर्थ लगाया जा सकता है । आदियुगीन ऋषि अथर्वन ने वरुण के साथ हुए संभाषण में यह दावा किया है कि मैं जो नियम बनाऊंगा उसका उल्लंघन कोई भी दास , जो आर्य से भिन्न हो , नहीं कर सकता चाहे वह कितना भी बड़ा क्यों न हो ।

म्यूर ने ऋग्वेद से ऐसे अट्ठावन अंश उद्धृत किए हैं जिनमें आर्य समुदाय के सदस्यों की धार्मिक शत्रुता या उदासीनता की भर्त्सना की गई है । इनमें से बहुत से परिच्छेद ऋग्वेद के मूल भाग (मंडल दो से आठ) में उपलब्ध हैं और उनसे पता चलता है कि आदिकाल में आर्यों की स्थिति कैसी थी । इनमें से कई अंश उन अनुदार व्यक्तियों के विरुद्ध हैं , जिन्हें अराधसम् " या अपूणत : कहा गया है । एक स्थल पर इंद्र को समृद्ध व्यक्तियों (एथमानद्वि) का संभवतः उन समृद्ध आर्यों का जिन्होंने उसकी कोई सेवा नहीं की थी , दुश्मन बताया गया है । दास और आर्य अपनी संपत्ति छिपाकर रखते थे , जिसके चलते उनका विरोध होता था । " धार्मिक पुस्तकों में वर्णित है कि अग्नि ने अपनी प्रजा की भलाई के लिए समतल भूमि और पहाड़ियों में स्थित संपत्ति को अपने कब्जे में कर लिया और अपनी प्रजा के दास तथा आर्य शत्रुओं को हराया । इन अंशों में यह बताया गया है कि जो आर्य दुश्मन समझे जाते थे उनकी भी संपत्ति (अनुमानतः मवेशी) छीन ली जाती थी और उन्हें आर्येतर लोगों की भांति कंगाल बना दिया जाता था ।

सन्दर्भ

- प्रथम साधारण सभा (I5 मार्च , 1823) में कोलथुक का भविण , एसेज I पू ० 1-2 . 3. वही , ii , पु ० 157-70 .4. यही ii . o 157 . 5. जेम्स मिल
- दि हिस्ट्री आफ इंडिया ' , ii , पृ ० 166 ; i पू ० 166-9 , पु ० 169 , पाद टिप्पणी 1. ऐसा प्रतीत होता है कि मिल ने भारत के इतिहास में जो साधारणीकरण , जो सामान्य विवेचन प्रस्तुत किया , उसका ब्रिटिश इतिहासकारों पर बहुत अधिक प्रभाव 6. वही , i , ०34 .7. वही , पृ ० 107 .
- जे ० सी ० पोष ब्राह्मणमऍड पू ० 46. 1902 ई ० में एक पुराने भारतीय लेखक ने खेद प्रकट किया है कि ब्राह्मणों को यूरेशियन (आंग्ल भारतीय उद्योगपतियों से सं ० जे ० सी ० घोष : दि इंगलिश वर्क्स आफ राममोहन राय , प्रस्तावना 123-192 १० XVIII ji पु ०10. आर ० जी ० भंडारकर ' फलेक्टेड वक्रस ' , ii , ५० 498 .
- स्वामी दयानंद सरस्वती ' सत्यार्थ प्रकाश चतुर्थ रामुल्लास , पू ० 83-92 113-122 . 12. वही , तृतीय समुहलास , पू ० 39 , 73-74 ,13. जे ० म्यूर : ' ओरिजिनल संस्कृत टेक्स्ट्स , लंदन , 1872 .14. वही , १०159-60 15.इंडस्टुडियनX.1-160 .
- 16. आर ० जी ० भंडारकर ' कलेक्टेड वक्रक्स ' , ii , पू ० 538-83 . ' हिस्ट्री आफ चाइल्ड मैरिज " पर जाली के निबंध की भंडारकर द्वारा की गई आलोचना भी देखें , वही , पृ . 584-602 17. बही , पू ० 522-23,18. एमिल सेनार्ट ' फास्ट इन इंडिया ' पू ० 12-13 .

- 19. ई ० डब्ल्यू ० हाकिंस म्यूचुअल रिलेशंस आफ दि फोर कास्ट्स इन मनु , पू ० 102 . 20. हिलग्रांट : ' ब्राह्मणेन ऐंड शूद्राज , फेस्टशिफ्ट फ्यूर काल वेनहोल्ड ' , पू ० 57 . 21. केतकर ' हिस्ट्री आफ कास्ट ' , पु ० 78 , पाद - टिप्पणी -3 22. वही , पू ०
- बल्थलकर की पुस्तक हिंदू सोशल इंस्टीट्यूशंस ' में राधाकृष्णन का प्रावकथन . दत्त और भुयॅ की रचनाओं में अपेक्षाकृत अच्छा ऐतिहासिक दृष्टिकोण लक्षित हुआ है ; पर देखें , दत्त पूर्व निर्दिष्ट भूमिका , पु ० VI .
- सरकार ' हिंदू सोशियालजी पु ० 92.95 शुक्रनीति सार के आधार पर , देखें के ० बी ० रंगस्वामी अयगर ' इंडियन कैमरेलिज्म ' पू ० 85
- जे ० म्यूर : ओरिजिनस संस्कृत टेक्स्ट्स ' , i , अध्याय IV (जरनल आफ दि अमेरिकन ओरिएंटल सोसायटी) , बाल्टी मोर , XIII , go57-376 . बी ० एस ० शास्त्री (इंडियन एंटीक्वेरी) , Ii , पृ०137-9
- वी ० एस ० भट्टाचार्य दि स्टेटस आफ शूद्राज इन एनसिएंट इंडिया (विश्वभारती क्वार्टरली) , प ० 268-278 .